

हिन्दी और मराठी भाषा में स्थित अंतःसंबंध

डॉ. विजय श्रावण घुगे

सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभाग, राणी लक्ष्मीबाई महाविद्यालय, पारोला जि. जलगाँव, भारत

सारांश

भाषा बहते नीर की तरह होती है। मौखिक और लिखित ये भाषा के दो रूप होते हैं। भारत में अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं। डॉ. वासुदेव नंदन प्रसाद लिखते हैं— "भारतीय भाषा के इतिहास में ५०० ई. से १००० ई. तक के काल को 'अपभ्रंश' कहा गया है। आधुनिक आर्य भाषाओं की उत्पत्ति इन्हीं अपभ्रंशों से हुई है"।¹ हिंदी की मूल उत्पत्ति शौरसेना से तथा मराठी की उत्पत्ति महाराष्ट्री अपभ्रंश से हुई है। हिंदी तथा मराठी के अंतःसंबंध को लेकर डॉ. हरदेव बाहरी लिखते हैं— "महाराष्ट्र प्रदेश की आधुनिक आर्यभाषा तीन प्रमुख बोलियाँ हैं— खड़ी बोली मराठी, बरारी (वैदर्भी), और कोंकणी। कोंकणी पर द्रविड़ का प्रभाव बहुत अधिक है। पूना की खड़ी बोली ही साहित्यिक भाषा है। पहले उत्तर की मराठी आदर्श मानी जाती थी। बस्तर में एक बोली हल्बी नाम से है। उसमें पूर्वी हिंदी और मराठी के समिश्रण पाये जाते हैं"।²

मूल शब्द: भाषाओं की उत्पत्ति, अधिकारिक राजभाषा, हिंदी की मूल उत्पत्ति, आधुनिक आर्यभाषा

भारत विविधता में एकता स्थापित करनेवाला देश है। भारत में अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं। उनमें हिन्दी और मराठी दोनों भाषाएँ भारोपीय परिवार में बोली जानेवाली भाषाएँ हैं। दोनों का उद्भव संस्कृत से हुआ है। संस्कृत के प्रभाव के कारण दोनों में समानताएँ मिलती हैं। दोनों भाषाओं की लिपि देवनागरी है। इस संदर्भ में डॉ. दामोदर खडसे कहते हैं— दोनों आर्य परिवार की भाषाएँ हैं। दोनों की लिपि एक (देवनागरी) ही है। महाराष्ट्र उत्तर और दक्षिण को जोड़ने का कार्य करता है।³ मराठी महाराष्ट्र की अधिकारिक राजभाषा है। यह गोवा की भी राजभाषा है। दोनों भाषाओं में आयी शब्दावली के अलग-अलग स्रोत हैं। दोनों में संस्कृत, प्राकृत, अंग्रेजी, अरबी, फारसी, पुर्तगाली, डच, कन्नड, तमिल, गुजराती, उड़िया आदि भाषाओं के शब्द मिल जाते हैं। दोनों भाषाओं में उच्चारण समान परंतु अर्थ भिन्न रूप में होनेवाले कुछ शब्द मिलते हैं। जैसे—मराठी में — शिक्षा (सजा) हिंदी में — शिक्षा (अध्ययन) उसी प्रकार कुछ शब्दों में वर्तनी भिन्न परंतु उच्चारण समान होता है। जैसे — घोड़ा। भाषा अध्ययन करते समय दोनों भाषाओं के शब्दों के फर्क को समझना जरूरी है अन्यथा अनर्थ हो सकता है।

तालिका 1

शब्द	हिंदी अर्थ	मराठी अर्थ
घट	घड़ा	नुकसान
केला	फल	किया
घाट	नदी किनारे की जगह	चढ़ान का रास्ता
घास	तृण	निवाला
जाड़ा	शीतकाल	मोटा
झोंका	तेज हवा	झूला
ताई	ताऊ की पत्नी	बड़ी बहन
दादा	पिता के पिता	बड़ा भाई
ओला	हिम की बूँद	गीला
दरी	चटाई	दो पर्वतों के बीच का भाग
पीक	थूकना	फसल
साहित्य	वाङ्मय	वाङ्मय, सामग्री
मेला	मेला	मर गया
हार	पराजय	माला
बगल	समीप, नजदिक	काख
प्रकृति	स्वास्थ्य	निसर्ग
पीठ	शरीर की पीठ	आटा

इस प्रकार दोनों भाषाओं में ऐसे कई शब्द मिलते हैं जिनका उच्चारण समान होता है किन्तु अर्थ भिन्न होते हैं। ऐसे अनगिनत शब्द हैं जो दोनों भाषाओं में मिलते हैं। जैसे— अंदाज, ढंग, अदा, अनुमान, अडचन, अज्ञान, अपेक्षा, आकांक्षा, अभ्यास, शासन, सदाचार, शत्रु, सीमा, कृतज्ञ, काल, काला आदि। इस प्रकार दोनों भाषाओं के शब्दों में इतनी समानता होती है की अनुवाद करते समय सावधानी बरतनी पड़ती है। इस प्रकार अन्य किसी भी भारतीय भाषासे हिंदी भाषा और मराठी भाषा सबसे नजदिक है। भारत का ज्यादातर संस्कृत वाङ्मय देवनागरी में लिखा गया है। जो दोनों भाषाओं में पाया जाता है। मराठी और हिंदी दोनों मूलतः संस्कृत से होने के कारण दोनों में बहुतसी समानताएँ हैं।

तालिका 2: मराठी तथा हिंदी में सर्वनामों का प्रयोग इस प्रकार होता है—

मराठी	हिंदी
मी	मैं
आम्ही	हम
तु	तू
तु	तुम
तुम्ही, आपण	आप
हे	ये, यह
ते	वे, वह, वो
आम्ही	हमने
तु	तुमने, तूने
यांना	इन्हें
आपण	आपने
त्यांना	उन्हें

दोनों भाषाओं के व्याकरण तथा विरामचिह्नों में भी समानता है। मराठी में तीन लिंग हैं, हिन्दी में दो हैं। दोनों भाषाओं में क्रियाएँ भी समान पायी जाती हैं। जैसे— हिंदी — राम चतुर है।; मराठी—राम हुशार आहे. हिंदी और मराठी में तत्सम और तद्भव शब्द भी समान रूप से पाए जाते हैं। तत्सम शब्द, आम, ऊँट, घोड़ा, सौत, खीरा आदि। तद्भव शब्द = आग, बच्चा, फूल, मोर आदि। इसी तरह अन्य भाषाओं के समान शब्द दोनों भाषाओं में आये हैं। इतनी समानताएँ होने के बाद भी हिंदी तथा मराठी

भाषी लोग भाषा तथा वाक्य रचना के ज्ञान के अभाव में एक दूसरे के साथ आपस में सार्थक वार्तालाप नहीं कर सकते। दोनों भाषाओं के प्राचीन उल्लेख मिलते हैं। महाराष्ट्र के कुछ भागों में भाषाओं के प्राचीन उल्लेख मिलते हैं। महाराष्ट्र के कुछ भागों के गोपराष्ट्र, मल्लराष्ट्र, पांडुराष्ट्र, नाम थे। जिनका उल्लेख महाभारत में मिलता है। महाराष्ट्री भाषासे, मराठी, निर्माण हुई। हिंदी में जो नाथ संप्रदाय अथवा नाथ साहित्य मिलता है उसकी गुरु परंपरा महाराष्ट्र में मिलती है। आदिनाथ – मत्स्येंद्रनाथ – गोरक्षनाथ – गहिनीनाथ – निवृत्तिनाथ।

इस संदर्भ में डॉ. बी. एन. पाटील लिखते हैं—मुळातल्या नाथ संप्रदायाला निवृत्तिनाथ आणि ज्ञानेश्वर यांनी भक्तीमार्गाची जोड देवून, महाराष्ट्रात भागवत, वारकरी संप्रदायाचा पाया रचला।¹⁴ महाराष्ट्र के भक्तों में संत नामदेव का नाम बड़े आदर से लिया जाता है। इन्होंने मराठी अभंगों के साथ साथ हिंदी में भी रचनाएँ की हैं। आ. रामचंद्र शुक्ल के शब्दों में, नामदेव की रचनाओं में यह बात साफ दिखाई पड़ती है कि सगुण भक्ति के पदों की भाषा तो ब्रज या परंपरागत काव्य भाषा है, पर, निर्गुण बानी, की भाषा नाथपंथियों द्वारा, गहीत खड़ी बोली या सधुक्कड़ी भाषा।¹⁵ इस प्रकार नामदेव ने अपनी रचनाओं द्वारा पंजाब तक भक्ति का प्रचार किया। संत ज्ञानेश्वर, संत एकनाथ, संत तुकाराम, संत नामदेव मराठी के प्रमुख संत हैं। संत ज्ञानेश्वर महाराष्ट्र संस्कृति के 'आद्यप्रवर्तक' माने जाते हैं। संत नामदेव के 61 पद 'गुरु ग्रंथ साहिब' में संग्रहित हैं। नामदेव के पदों को वाणी अथवा बाणी कहा जाता है। "हरि नांव हीरा, हरिनांव हीरा। हरि नांव लेत मिटै सब पीरा"। इस प्रकार हिंदी में नामदेव के अभंग प्रसिद्ध हैं। संत एकनाथ की 'भागवत' एक सर्वोत्कृष्ट ग्रंथ है। उसी प्रकार संत तुकाराम भक्ति आंदोलन के एक प्रमुख संत कवि थे। इनकी अभंग गाथा प्रसिद्ध है।

मराठी और हिंदी भाषाएँ सामाजिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक स्तर पर एक दूसरे से हमेशा जुड़ी रही हैं। अनेक मराठी रचनाओं का हिंदी में अनुवाद हुआ है। जैसे— दया पवार – बलुंत, शंकरराव खरात, – तराळ—अंतराळ – प्र. ई. सोनकांबळे—आठवणीचे पक्षी। विष्णु खरे, गजानन माधव मुक्तिबोध, चंद्रकांत देवताले, कुमार अंबुज, मंगलेश डबराल, पवन करण इनकी कविताओं के मराठी अनुवाद हुए हैं। हिंदी गद्य साहित्य के भी मराठी में अनुवाद हो रहे हैं। मामा वरेरकर विजय तेंदुलकर, महेश एलकुंचवार, प्रेमानंद गज्जी, इनके मराठी नाटकों के हिंदी अनुवाद हुए हैं। अनेक मराठी साहित्य कृतियों के हिंदी अनुवाद हुए हैं। गुलज़ार द्वारा कुसुमाग्रज की कविताओं का किया गया हिंदी अनुवाद पाठकों को पसंद आ रहा है। किंतु इसमें गुलज़ार का प्रभाव ज्यादा दिखाई देता है। हिंदी और मराठी में तुलनात्मक अध्ययन भी प्रचुर मात्रा में हुआ है। जिनमें संत साहित्य तथा साहित्यिक विधाओंपर ज्यादा काम हुआ है। उसी प्रकार प्रल्हाद केशव अत्रे, पु. ल. देशपांडे, वि. वा. शिरवाडकर (कुसुमाग्रज), ना. सी. फडके, रणजित देसाई, ग. दि. माडगूळकर, साने गरुजी, व. पु. काळे, राम गणेश गडकरी, विजय तेंदुलकर, विष्वास पाटील, शांता शेळके, डॉ. लक्ष्मण देशपांडे, त्र्यंबक बापुजी ठोमरे (बालकवि), बहिणाबाई चौधरी, मंगेश पाडगांवकर, वि. दा. करंदीकर, भालचंद्र नेमाडे, वि. स. खांडेकर आदि अनेक मराठी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार हैं। जिनकी रचनाओं तथा कविताओं के हिंदी में अनुवाद हुए हैं। अनेक ऐतिहासिक उपन्यास, नाटक तथा दलित साहित्य का हिंदी में अनुवाद हुआ है। हिंदी साहित्य लोकाभिमुख होने के कारण मराठी में आते ही लोगों के लिए जिज्ञासा का विषय बन जाता है। किंतु मराठी—साहित्य जब हिंदी में जाता है तो पाठकों की पसंद में उतरता नहीं।

हिंदी भाषा की तरह मराठी भाषा में छपनेवाली विभिन्न पत्रिकाओं तथा समाचारपत्रों का भी नवजागरण और राष्ट्रीय चेतना के आंदोलन में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। छत्रपति शिवाजी महाराज, राजर्षी शाहू महाराज, महात्मा ज्योतिबा फुले, सावित्रीबाई फुले, स्वातंत्र्यवीर वि. दा. सावरकर, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर इनके सामाजिक तथा समाज सुधार विषयक विचारों का प्रचार—प्रसार मराठी से ही हिंदी में हुआ। इस प्रकार हिंदी और मराठी का अंतःसंबंध पूर्वापार से ही रहा है।

इस प्रकार अनेक परिवर्तनों के बाद भी भारत की भाषाई विविधता कायम है। इसमें इन दोनों भाषाओं की बोलियों का महत्वपूर्ण स्थान है। भारतीय संस्कृति और समाज के विकास में भाषाओं का महत्वपूर्ण स्थान है। हिंदी और पश्चिम भारतीय भाषाओं (कोंकणी, मराठी, गुजराती) में मराठी का अंतःसंबंध अधिक महत्व रखता है। दोनों भाषाएँ आपसी व्यवहार, साहित्य, व्यापार, सांस्कृतिक तथा सामाजिक चेतना की दृष्टिसे महत्वपूर्ण हैं। दोनों भाषाएँ बहती नदी की तरह प्रवाहमान और उपयोगी हैं। महाराष्ट्र अहिंदी भाषी क्षेत्र होते हुए भी हिंदी के प्रचार प्रसार के लिए निरंतर आगे रहा है। अनेक मराठी भाषी साहित्यकार तथा विद्वान लेखकों ने मराठी भाषा तथा साहित्य को समृद्ध किया है। कुछ हिंदी साहित्यकार महाराष्ट्र को कर्मभूमि बनाकर हिंदी भाषा की सेवा करते रहे हैं। ज्ञानरंजन (अकोला), शैल चतुर्वेदी (अमरावती), नीलाभ (मुंबई), प्रदीप चौबे (चंद्रपुर), उमाकांत मालवीय (मुंबई) ये महाराष्ट्र में जन्मे हिंदी लेखक/ कवि हैं। गोपाल सिंह नेपाली, गुलज़ार, राही मासूम रज़ा, शंकर शैलेंद्र, नरेंद्र शर्मा, प्रसून जोशी, अनुराधा सिंह, बोधिसत्व, निलय उपाध्याय, सुधा अरोड़ा, जैसे और भी साहित्यकार मुंबई के निवासी रहे हैं। सुशीला टाकभौरे नागपूर निवासी हैं। गजानन माधव मुक्तिबोध इनके परदादा वासुदेव मूलतः जलगाँव के निवासी थे। उनका आखरी नाम कुलकर्णी था। उसी प्रकार मराठी के कुसुमाग्रज, नामदेव ढसाल, भालचंद्र नेमाडे, नारायण सुर्वे, विश्वास पाटील, इनकी रचनाओं के हिंदी अनुवाद प्रसिद्ध हैं। साथ ही महाराष्ट्र के आनंद प्रकाश दीक्षित, डॉ. मु. ब. शहा, डॉ. शंकर पुणतांबेकर (राष्ट्रीय व्यंग्यकार), डॉ. तेजपाल चौधरी, डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे, डॉ. केशव प्रथमवीर, डॉ. मधु खराटे (सुप्रसिद्ध गज़ल समीक्षक) जैसे और भी लेखक हिंदी भाषा की सेवा कर रहे हैं।

इस प्रकार महाराष्ट्र के साथ मध्यप्रदेश, गुजरात, छत्तीसगड, आंध्रप्रदेश, कर्नाटक राज्योंकी भौगोलिक सीमायें होने के कारण तथा ऐतिहासिक संबंध होने के कारण मराठी भाषा तथा अन्य भाषाओं के साथ हिंदी का अंतःसंबंध है। राजनीतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, स्तर पर भी हिंदी और मराठी एक दूसरे से जुड़ी हैं। मुंबई के फिल्म निर्माण का भी इसमें महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मराठी और हिंदी भाषा का अंतःसंबंध अपने आप में गंगा—जमुना का मिलन है।

संदर्भ ग्रंथ

1. आधुनिक हिंदी व्याकरण और रचना—डॉ. वासुदेव नंदन प्रसाद, पृ. 05.
2. हिंदी उद्भव विकास और रूप—डॉ. हरदेव बाहरी, पृ. 47.
3. नागपुर हिंदी साहित्य संमेलन के 68 वे अधिवेशन में डॉ. दामोदर खडसे का मंतव्य—इंटरनेट—
4. प्राचीन महाराष्ट्र वाङ्मय वैभव—डॉ. बी. एन. पाटील—पृ. 241.
5. हिंदी साहित्य का इतिहास—आचार्य रामचंद्र शुक्ल—भूमिका—रामस्वरूप चतुर्वेदी—पृ.45.